दुनिया का अंतिम घोषणापत्र

कमल जीत चौधरी

दुनिया का
अंतिम घोषणापत्र

कविता-संग्रह

कमल जीत चौधरी

कमल जीत चौधरी

कमल जीत चौधरी जब यह लिखते हैं— "जिस कविताई (कला) में तस्दीक, शिनाख़्त, प्रेम और प्रतिरोध करने की क्षमता नहीं है, वह किसी काम की नहीं है" तो उनका सही परिचय मिल जाता है। बाकी वे जम्मू-कश्मीर के साम्बा जिले के एक सीमावर्ती गाँव-काली बड़ी में रहते हैं। 2007 में लिखना शुरु किया। अब तक पचास से अधिक प्रिंट पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ, आलेख, अनुवाद और कथाएँ प्रकाशित हैं। इनका लेखन अनेक ऑनलाइन मंचों पर भी लाइव है। इनके तीन कविता संग्रह- 'हिन्दी का नमक' (2016), 'समकाल की आवाज़ : चयनित कविताएँ' (2022) और 'दुनिया का अंतिम घोषणापत्र' (2022) प्रकाशित हुए हैं। इसके अलावा इनके संपादन में जम्मू-कश्मीर की प्रतिनिधि हिन्दी कविता का एक संकलन- 'मुझे आई डी. कार्ड दिलाओ' (2018) भी छपा है। 'इस सदी के सामने' (स. राजेश जोशी, आरती) 'कँटीले तार की तरह' (स. संजय कुंदन), 'आठवाँ युवा द्वादश' (स. निरंजन श्रोत्रिय), 'स्वर एकादश' (स. राज्यबर्धन), 'बच्चों से अदब से बात करो' (स. अजय कुमार पाण्डेय), 'तिमिर में ज्योति जैसे' (स. अरुण होता) आदि महत्वपूर्ण संकलनों में कविताएँ संकलित हुई हैं। इन्हें 'अनुनाद सम्मान' और 'पाखी शब्द साधक सम्मान' मिला है। इनकी कविताओं का उड़िया, बंगला, मराठी और अंग्रेज़ी में अनुवाद और प्रकाशन हुआ है।

संप्रति : जम्मू-कश्मीर उच्च शिक्षा विभाग में प्राध्यापक हैं।

सम्पर्क :
डाक पता : गाँव- काली बड़ी, तहसील व जिला- साम्बा-184121 (जम्मू-कश्मीर)

ई-मेल : kamal.j.choudhary@gmail.com
मोबाइल नम्बर : +91-9419274403

दुनिया का
अंतिम घोषणापत्र

कमल जीत चौधरी

वेरा प्रकाशन

© कमल जीत चौधरी
ISBN : 978-81-972323-8-1

ई-संस्करण : 2024

आवरण : कौशलेश पाण्डेय # 79033 87535

प्रकाशक :
वेरा प्रकाशन
मेन डिग्गी रोड, मदरामपुरा
सांगानेर, जयपुर-302029 (राज.)
+91-96804-33181
veraprakashan@gmail.com

DUNIYA KA ANTIM GHOSHNAPATRA
Poems by Kamal Jeet Choudhary

उस अमरता के ख़िलाफ़
जो जीवन को छोटा बनाने के प्रयास में है

प्रिय कविता,
जीवन माँ ने दिया,
तुमने लौ दी इस जीवन को।

उन सभी का धन्यवाद;
जिनके कारण यहाँ धन्यवाद कहने लायक़ बना।

मनुष्यता के मूल सन्दर्भों की शिनाख़्त

हिन्दी कविता का युवा संसार जिन चुनौतियों से भरा है, उनमें एक अहम चुनौती है अपने समय की शिनाख़्त और कविता में उसे कहने के लिए अपने-से एक मुहावरे की तलाश। यह शिनाख़्त न सिर्फ़ समाज और उसके राजनीतिक-आर्थिक ताने-बाने में मनुष्यता के होने की शिनाख़्त है, बल्कि विचार की भूमि पर मनुष्यता के मूल सन्दर्भ की शिनाख़्त भी है। मुहावरे की तलाश जिसे मैंने कहा, वह कवि का अपने भाषा-भूगोल में रहवास का प्रसंग है और भाषा में कवि-व्यक्तित्व के निर्माण का भी। इन दोनों को समान रूप से साध लेने वाले कवि कम होते हैं, कमल जीत चौधरी उनमें से एक हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि बहुत सारे कवियों में से एक नहीं, बहुत सारे कवियों में बहुत कम हैं, जो कवि हैं - कमल जीत उनमें से एक हैं।

इस तथ्य को मैं एक निजी लेकिन वैचारिक ख़ुशी की तरह पाता हूँ कि कमल जीत 'केंद्र' के कवि नहीं हैं। वे कविता में साधारण जीवन और मनुष्यों को केंद्र में रखने वाले कवि हैं। बहुपरिभाषित मानवता और अबूझ नृशंसताओं के बीच कहीं किसी दुर्लभ हुई जाती नागरिक पीड़ा के साथ देश और समाज को अपनी कविताओं में लिखते हुए कमल जीत का चेहरा, देश के विचारवान और संवेदनशील भावुक युवा का चेहरा है। ऐसे युवा का कविता में होना, कुछ देह में मस्तिष्क और हृदय के होने जैसा उजला तथ्य है।

जानता हूँ कि कमल जीत के कवि-सामर्थ्य और अपने-से मुहावरे का साक्ष्य यह संग्रह बनेगा, क्योंकि यह ऐसी कविताओं का संग्रह है:

जो प्यार में होते हैं
चाँद उनकी शाम में बिखरे पत्तों से
निकलता है

और उठकर खेतों में चला जाता है

जो प्यार में होते हैं
पूरी-पूरी रात गेहूँ की बालियाँ बीनते हैं

जो प्यार में होते हैं
उनका जहाज़ भले डूब जाए
पर उनका सूर्य कभी नहीं डूबता।

कमल जीत की यह छोटी-सी कविता अपने अकूत विस्तार में मुझे लोर्का, वॉन गॉग और पाश तक ले गई। संसार में प्रेम और जीवन की गरिमा के कवि ऐसे ही होते हैं, आपको बड़ी यात्राओं पर ले जाते हैं। उन्हें बहुत बोलना नहीं पड़ता, साधारण जन के जीवन का प्रेम और स्वप्न उनकी कविता के हृदय में धुकधुकाते सुनाई पड़ते हैं। हिन्दी की समकालीन आलोचना ऐसे हृदय का ई.सी.जी. कभी ठीक-ठीक पढ़ पाए, यही कामना है।

इस संग्रह का स्वागत और कवि को बधाई। 'वेरा' को शुक्रिया इस चयन के लिए।

शिरीष कुमार मौर्य

ये कविताएँ

प्रिय पाठको, नमस्कार!

ये कविताएँ; बेटी के कवि की हैं। ये कविताएँ उस 'सम्मान' के विरुद्ध हैं; जो आम आदमी की रूह का अपमान कर रहा है। यह कविताएँ उस 'अमरता' के ख़िलाफ़ हैं; जो जीवन को छोटा बनाने के प्रयास में है। दरअसल यह कविताएँ उन सीमा-रेखाओं को टूटते हुए देखना चाहती हैं; जो आदमी को आदमी से अलग करके देखती हैं, उन्हें स्वामी-सेवक या शोषक-शोषित बनाती हैं। यह कविताएँ किसी साहब की ज़ेड सुरक्षा नहीं हैं। यह कविताएँ हमारे प्रतिरोध, दुःख, चेतना, करुणा, परस्परता, सुन्दरता, प्रेम, सामर्थ्य, दायित्व, आत्ममंथन, चूकों और सपनों को अभिव्यक्त करती हैं। आइए, अगले पृष्ठों पर स्वयं को अलग-अलग भावों में पढ़ें, पढ़कर मुट्ठी बाँध लें।

सामूहिकता ज़िंदाबाद!!

पुनश्च:

इस कविता संग्रह का पहला संस्करण 2022 के अंत में; दख़ल प्रकाशन दिल्ली से छपा था। पिछले आठ-दस महीने से यह संग्रह ख़रीद के लिए कहीं उपलब्ध नहीं था। छपने के दो महीने बाद यह ऑनलाइन ख़रीद के लिए उपलब्ध हुआ, और फिर कुल जमा पाँच-छह महीने उर्दू बाज़ार पर

उपलब्ध रहा, और कहीं नहीं। दरअसल दख़ल के मालिक अशोक कुमार पाण्डेय जी इधर अपने लेखन और पत्रकारिता में अत्यधिक व्यस्त हैं। इसके चलते वे दख़ल को नियमित नहीं कर पा रहे थे। इस बीच वेरा प्रकाशन ने इस अनुपलब्ध, अप्रसारित और अप्रचारित किताब में रुचि दिखाते हुए, इसे पुन: प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा। इस बारे में मैंने दख़ल से बात की, और अशोक जी की विनम्र सहमति पाकर यह किताब वेरा को दे दी।

उन्हीं कविताओं के साथ; अब यह संग्रह और अधिक सुन्दर रुप में आपके सामने है। इसे प्यार दें। धन्यवाद!

आपका

कमल जीत चौधरी

मई 2024 (दूसरा संस्करण)

अनुक्रम

आप चलिए

जो आवाज़ रिकॉर्ड नहीं हुई

सिवाय कविता के

एक पिता की ओर से

आख़िर तक

सफ़ेद खरगोश

माँ इंतज़ार करना

साक्षात्कार

पलाश को याद कर-कर के

एक फूल के लिए

विभिन्न मत

प्रस्ताव

अपनी भाषा की आग

बुनाई का दु:ख -1

बुनाई का दु:ख -2

प्रिय कवि पाश के लिए

पत्थर-गाथा

संवाद

आपके जूते बहुत सुन्दर हैं

लड़ते और प्यार करते हुए

अग्रज आसी जी के लिए

क्रोध का पेड़

एक दूसरे को छूते रहना चाहिए

रुमाल

दु:ख

जिसने बंदूक़ बनाई

हिन्दी के हरफ़नमौला

सारंग से बातें – 1

सारंग से बातें - 2

सांरग से बातें - 3

सारंग से बातें - 4

कविताएँ और चुनाव

मौत

नाच

तथागत के लिए

समकालीनता

घोषित शांतिकाल और अघोषित युद्धकाल में

किताब और रेल

इतना प्रेम करते हो तुम

वैसे मैं कहना यह चाहता हूँ

जो प्यार में होते हैं

उसी दिन

पहली बात यह है कि

पेड़ का बयान

कांटा

गलियों में चाकू लहराते लोग

एक बात बताओ

लम्बे आदमी का कद
17 नवम्बर 2017
पहली किताब
बाँस
सम्बन्ध
यक़ीनन
छोटे बड़े
खून
पिछली सीटों पर
चुप रहती लड़की
विश्व पुस्तक मेला-2016 : मुख़्तसर
लोहा
ताला होने से
सुई और धागा
तिनके
वसंत
एक कवि को समरजीत जानता है
बा जी को याद करते हुए
नवारुण दा को याद करते हुए
एक बच्चे की मौत हुई
आटे का झंडा
उबलता हुआ दूध
रात को होस्टल में अकेले रहते हुए
जबकि
उन दिनों

एक सपना
दुनिया का अंतिम घोषणापत्र